कृपया अमल कर व्यवहारिक बने। ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ा जा सकें।

"एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि तेरे भाणे सरबत दा भला"

28. एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि तेरे भाणे सरबत दा भला

- "अन्न" केवल भूखे अथवा जरूरतमंद के लिये ही उपलब्ध विशेष है शेष समझ-बूझ कर ही ग्रहण करें.....!
- कहीं भी - किसी भी महानतम स्थान विशेष पर भी सभी प्रकार का चढ़ाया हुआ चढ़ावा - महा कालकूट रूपी ज़हर से भी बढ़कर भयावह जहरीला विशेष ही होता है (प्रत्येक काल विशेष

में भी) अतः सभी चालाकी भरे धार्मिक-संसारिक महा कर्म काण्डो से भी इस के अपने ही कमाये हुऐ निजी नतीजो के एक सूक्ष्म से कण विशेष को भी बदलना तो दूर रहा केवल हिलाना तक भी घोर महा असंभव विशेष ही है वैधानिक तौर पर.....! (प्रार्थनायें नज़रे मारना - अरदासे वगैरह केवल महाकाल काल का भ्रम रूपी माया जाल विशेष है ।)

- सभी प्रकार के चढ़ावो-प्रभावो पर किसी प्रकार की जुगाली विशेष करने वालो को खूब अच्छी तरह से विचार विशेष कर लेना चाहिए क्योंकि नतीजा तो पहले से ही निश्चित है क्योंकि अवश्य ही किसी की हर ज़र्रे पर नज़र रूपी पकड़ विशेष है अर्थात केवल जुगाली भरने से पहले तक ही छूट विशेष है भरने के बाद तो केवल चीख-पुकार रूपी भुगतना ही शेष मात्र है.....? (कूक पुकार को न सुणे अत्थे पकड़ ओह ढ़ोहया....!)
- "यश अथवा मान" रूपी वासनात्मक कीड़ा तेरे स्वंय के अति मेहनत से कमाये हुऐ "दुर्लभ सतोगुण विशेष" को भी पूरी तरह से खा-चट-हज्म कर जाने में घोर समर्थ विशेष हैं (जैसे दीमक लकड़ी को चट कर जाती है)।
- "आवाम" प्रत्येक काल में अन्धा ही होता है अतः इसे लूटना अथवा इस की चमड़ी उतारना तो और भी बहुत ही आसान होता है परन्तु लूटने वालो "खूनी - लोभी भेड़ीयो" की भी अपनी ही

कमायी हुई एक नतीज़े रूपी भुगतान की "एक भयावह - तड़पने वाली घड़ी विशेष" भी साथ के साथ ही निश्चित विशेष होती जाती हैं जो किसी भी प्रकार के ब्लातकारी को इंटरेस्ट के सहीत तड़प-तड़प कर हज़्म विशेष करने के लिये मजबूर कर ही देती है (ब्याज़ के रूप में उसे अपनी ही चमड़ी के साथ-साथ हड्डियां भी खुरचवाने के लिये मज़बूर विशेष होना ही पड़ता है अपने ही जानकारों - सप्लायरो - साथियों - अनुयायियों - सेवादारो - सम्बन्धियों के साथ अपने-अपने अधिकारो के अनुसार अर्थात किस ने कितना भोगा अथवा भोग लगाया या के जुगाली विशेष-विशेष भरी..... मात्रा या समय इत्यादि के अनुरूप से वैधानिक तौर पर.....?)।

- केवल एक "अकाल - काल" रूपी "परम चेतन सत्ता" विशेष के नाम रूपी "प्रसाद" की मात्रा "पचास ग्राम" के समीपतम तक ही ग्रहण योग्य है कोई भी इस का तिरस्कार नहीं कर सकता क्योंकि इस में उस का अपना कमाया हुआ निजी जहर विशेष भी समाया हुआ है.....? A से Z सब कुछ केवल वही एक ही तो है, अतः सोच - विचार कर ही अगला कदम बढ़ाएं.....!
- केवल मेहनत तथा ईमानदारी की कृत से ही समाज का भरण - पोषण, मलहम - पट्टी अथवा बदलाव या सुख - सम्पदा का

प्रत्यक्ष उपलब्ध सम्पन्न विशेष होना सम्भव है शेष तो केवल भ्रम रूपी मरीचिका मात्र ही हैं विशेष रूप से अर्थात आप केवल अपने स्वयं को ही ठग रहे हो बड़ी चालाकी से चतुराई द्वारा.....!

"कूड़ बोल मुरदार खाई - अवरे नू समझावण जाई ।"

मुठ्ठा आप - मुहाये साथे - नानक ऐसा आगू जापे .....!